Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

साहित्य एवं मनोविज्ञान का अंतर्संबंध

पुष्पा यादव
शोध छात्रा, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा,पंजाब।

शोधसारांश– साहित्य एवं मनोविज्ञान का संबंध बहुत गहरा है। ये एक दूसरे के साध्य एवं साधन बन गये हैं। साहित्य का अस्तित्व मनोविज्ञान के बिना संभव नहीं हो सकता, किन्तु मनोविज्ञान का अस्तित्व साहित्य के बिना भी हो सकता है। हिन्दी साहित्य में मनोविज्ञान दो रूपों में हमारे सामने उभरकर आता है। पहला, वे रचनाएं जिसमें प्रत्यक्ष रूप से मनोवैज्ञानिकता के तत्त्व दिखायी देते हैं। दूसरा स्वरूप उन रचनाओं का है, जिसमें मनोवैज्ञानिक तत्त्व अप्रत्यक्ष रूप से समाहित है।

मुख्य शब्द – साहित्य, मनोविज्ञान, समाज, मार्मिक, अभिव्यक्ति, कलात्मक, मानवीय, सार्थकता।

साहित्य मानव-समाज की संचित आकांक्षाओं-अपेक्षाओं, स्वप्नों तथा संकल्पों की मार्मिक और शाब्दिक अभिव्यक्ति है, जिसके द्वारा समष्टि की आंतरिकता एवं सुख-दुख की अनुभूति होती है। जिस प्रकार जीवन को परिभाषित करना कठिन है उसी प्रकार साहित्य को भी परिभाषाओं की सीमा में बाँधना कठिन है। वस्तुत: साहित्य समष्टिगत आधार पर मानव-मन की रुचि से संबंधित सहजानुभूति की आनंदप्रद और कलात्मक अभिव्यक्ति है, जिसका प्रयोजन मानवीय जीवन को अर्थवत्ता प्रदान करना है। मानव-जीवन, सृष्टि के सर्वोत्कृष्ट प्राणी का जीवन है। मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण समाज में ही संभव है। व्यक्ति के मन-मस्तिष्क पर समाज में घटित घटनाओं का प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। अपने मस्तिष्क पर पड़े इस प्रभाव को साहित्यकार, साहित्य के माध्यम से कृति के रूप में प्रकट करता है। स्पष्टत: कृति, भाव का कथ्य अथवा प्रस्तुति है। इस प्रस्तुति में सामाजिक तत्त्वों का समावेश अपने आप ही हो जाता है और वह सामाजिक जीवन के मानस व्यापार का प्रतिफल कहलाता है।साहित्य मानवीय संस्कृति का मूर्त रूप है। अपने अस्तित्व के आरंभिक क्षणों से लेकर आज तक मनुष्य और मानव-चेतना की विकास-यात्राओं से प्राप्त अनुभवों एवं उनके सत्यों में जो कुछ भी संरक्षण करने योग्य है-वह साहित्य है। किसी भी साहित्य की रचना का कोई न कोई आधार अवश्य होता है। साहित्य का प्रयोजन मानवीय जीवन को अर्थवत्ता प्रदान करना तथा मानव का हित करना है। जीवन पर आधृत होने के बावजूद यह रचनाकार की कल्पना पर आश्रित होता है। साहित्य के माध्यम से न केवल मनुष्य की ज्ञान प्राप्ति की इच्छा पूरी होती है, बल्कि यह मानव-जीवन को सरस, सुखी एवं सुंदर बनाने की दिशा में सार्थक प्रयास भी है। साहित्य का उद्देश्य मानव-कल्याण है। मानव-कल्याण के इस स्वरूप में वैयक्तिक एवं सामाजिक, दोनों तत्त्वों के सामंजस्य का भाव निहित है। इस प्रकार साहित्य स्वांत सुखाय' और बहुजन हिताय की पूर्ति करता है। साहित्य की मानवीय सार्थकता जीवन में आस्था रखते हुए विकास पथ पर निरंतर बढ़ते रहने में ही है। डॉ. श्याम सुंदरदास एक स्थान पर कहते हैं मनुष्य के भाव और विचार तथा उसकी कल्पनाएँ भी बड़ी विचित्र और अनोखी हुआ करती हैं। साहित्य मनुष्य की इन्हीं विचित्र भावों, विचारों तथा कल्पनाओं का व्यक्त रूप है। मनोविज्ञान मानव स्वभाव, मानव व्यवहार का विश्लेषण करता है। साहित्य और मनोवैज्ञानिकता की आधारभूत सामग्री एक ही है। दोनों ही व्यक्ति को

समझने की चेष्टा में रत है। मनोवैज्ञानिकता का संबंध वास्तविक जीवन से है और साहित्य की अनुभूति जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति से होती है।

संसार का समस्त ज्ञान-विज्ञान किसी न किसी रूप में मानव व्यवहार से संबन्धित है। जन्म से ही मानव को सामजिकता का निर्वहन करना पड़ता है। इसके लिये उसे निरन्तर अपनी बुद्धि और ज्ञान का विकास करना पड़ता है। इस सतत प्रक्रिया के फलस्वरूप उसके व्यवहार में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन कब, कैसे, किस रूप में होता है? इसकी जानकारी मनोविज्ञान से मिलती है। मनोविज्ञान मानव मन का विशिष्ट विज्ञान है। मनोविज्ञान मन के भावों या मनोंवेगों का समुच्च्य, मनोविकारों या अनुभूतियों का कोष है, इन्हीं भावों, अनुभूतियों, उद्वेगों की व्याख्या मनोविज्ञान में प्रस्तुत की जाती है। प्रारंभ से ही मानव मन की अपने और दूसरों के स्वभावों, गुणों, व्यवहारों, संबंधों, प्रयासों, सुख-दु:ख तथा अन्य अनुभवों में रूचि रही है। मानव स्वभाव से चितंतनशील, तर्कशील एवं जिज्ञासु प्राणी रहा है। अपने इसी स्वभाव के कारण वह आदिम युग से ही नवीन ज्ञान-विज्ञान को तलाशता रहा है। जब मानव का ध्यान सर्वप्रथम जीवन और जगत् के रहस्य की ओर गया, तो उसने पहले जीवन और जगत् का सूक्ष्मातिसूक्ष्म निरीक्षण एवं अवलोकन किया और फिर इसके अनेक रहस्यों का उद्घाटन किया। इसके अंतर्गत उसने आत्मा परमात्मा, मन, चेतना, ज्ञान, योग, समाधि जैसे अनेक स्वानुभूत तत्त्वों की खोज की उसकी इसी खोज ने दर्शन-शास्त्र को जन्म दिया। इसी दर्शन-शास्त्र के अंतर्गत जब उसने पहली बार स्वयं मानव जीवन से संबंधित कुछ क्रियाओं को लक्ष्य करके कुछ सिद्धांतों का प्रतिपादन किया, तो एक अलग शास्त्र का जन्म हुआ, जिसको कालांतर में मनोविज्ञान कहा गया। प्रारम्भिक विद्वानों ने मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान व विचारों का विज्ञान कहा है।

व्यक्ति के व्यवहार पर सर्वप्रथम व सर्वाधिक प्रभाव उसके परिवार का ही पड़ता है सामान्यत: विक्षुब्ध एवं विघटित या असंतुलित परिवार का उसके सामान्य व्यवहार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति ऐसे परिवार में भय, तनाव, विशाद, ऊब आदि मनोविकृतियों से ग्रसित हो जाता है, जिसके कारण वह लक्ष्यहीन दिशाहीन एवं असामाजिक होकर, अजनबीपन एवं एकाकीपन का जीवन व्यतीत करने को विवश हो जाता है। असामान्य-व्यवहार के प्रमुख उत्तरदायी कारणों में मद्यपानता भी एक प्रमुख कारण है। मद्यपानता से पीड़ित होकर व्यक्ति असामान्य व्यवहार का प्रदर्शन करने लगता है। इसी प्रकार लैंगिक दुर्बलता, भाई-बहनों में प्रतिद्वंद्विता, कुसमायोजी या बुरे संगी साथी का संसर्ग और हिंसा एवं त्रासदी जैसे अनेक कारण ऐसे हैं, जो व्यक्ति के असामान्य-व्यवहार को विकसित करते हैं।

मनोविज्ञानशब्द अंग्रेजी के साइकोलाजी (Psychology)शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। साइकोलाजी (Psychology) शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों साइकी (Psyche)और लोगस (logos) से मिलकर बना है। Psyche+Logos. Psyche का अर्थ है 'आत्मा' (Soul) और Logos का अर्थ अध्ययन (Study) है। मनोविज्ञान का अर्थ पहले आत्मा से लिया जाता था, किन्तु बाद में आत्मा के स्थान पर आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने मन शब्द का प्रयोग किया। इसलिये मन के ज्ञान को मनोविज्ञान कहा जाने लगा। मनोविज्ञान के सिद्धांतो एवं मूल्यों का विकास करने का श्रेयसिगमंड फ्रायडको जाता है, जिन्होंने मनोविज्ञान को एक नयी दिशा प्रदान की एवं इसे उचित मार्ग की ओर प्रेषित किया। आधुनिक मनोविज्ञान का जनक विलियम वुण्ट(Father of modern psychology)को कहा जाता है। इन्होंने वर्ष 1879 में सर्वप्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला का निर्माण किया था। सामान्यत: व्यक्तियों और पशु-पक्षियों के व्यवहार एवं उनकी मानसिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। अत: इनकी इस विशेषता से साफ हो जाता है कि इसका सीधा संबंध 'मस्तिष्क' से है। मानसिक क्रियाओं के अंतर्गत आने वाली समस्त प्रक्रिया जैसे-संवेदना, अवधान, प्रत्यक्षण, सीखना, स्मृति, चिंतन आदि इसके अध्ययन में सम्मिलित की जाती है। मनोविज्ञान का चिन्तन-मनन करने के बाद मनोवैज्ञानिकों ने इसे निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया है-

बोरिंग, लैंफेल्ड व वेल्ड:- "मनोविज्ञान, मानव प्रकृति का अध्ययन है।"[1]

स्किनर:- "मनोविज्ञान, व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है।"[2]

वुडवर्थ:- "मनोविज्ञान वातावरण के संबंध में व्यक्तियों की क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।"[3]

वृहत् हिन्दी कोश के अनुसार:- "मनोविज्ञान मन की प्राकृत, वृत्तियों आदि का विवेचन करने वाला विज्ञान अथवा मानस शास्त्र है।"[4]

मानक हिन्दी कोश के अनुसार:- "मनोविज्ञान वह विज्ञान या शास्त्र है, जिसमें मनुष्य के मन, उसकी विभिन्न अवस्थाओं तथा क्रियाओं, उस पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन तथा विवेचन होता है।"[5]

डॉ. नगेन्द्र:- "मनोविज्ञान के अन्तर्गत मस्तिष्क की विविध क्रियाओं एवं शक्तियों का तथा मानव समाज स्वभाव एवं कार्यों की मूल प्रवृत्तियों एवं प्रेरणाओं का अध्ययन किया जाता है।"[6]

'मनोविश्लेषण' शब्द अंग्रेजी के साइकोएनैलसिस (Psychoanalysis) शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। मनोविश्लेषण का सामान्य अर्थ है- मन का विविध स्तरों पर विश्लेषण करना। मनोविश्लेषणवाद के जनक सिंग्डम फ्रायड मन की तीन अवस्थाएं मानते हैं- चेतन, अवचेतन (अर्द्धचेतन) तथा अचेतन।जहां चेतन का संबंध वर्तमान और वास्तविकता से होता है वहीं अवचेतन न ही पूर्णत: चेतन होता है और न ही पूर्णत: अचेतन। इसमें वे सभी भाव, विचार एवं इच्छाएं रहती हैं, जो हमारे चेतन या अनुभव में नहीं, लेकिन थोड़े से प्रयास के बाद हमारे चेतन मन में लौट आती हैं। अचेतन मन का वह भाग होता है, जिसमें भाव, विचार या इच्छाएं कभी स्पष्ट व सीधे मार्ग से चेतन में नहीं आती, अपितु वे स्वप्न, सम्मोहन, मनोविकृतियों आदि के रूप में पहुंचती है, जो व्यक्ति के जीवन और व्यक्तित्व को सर्वाधिक प्रभावित करती हैं। अचेतन के भाव, विचार एवं इच्छाएं अधिकांशत: कामुक, असामाजिक, अनैतिक तथा घृणित होती हैं। फ्रायड का मानना है कि चेतन व अवचेतन की अपेक्षा हमारे व्यवहार पर सर्वाधिक प्रभाव अचेतन मन की अनुभूतियों एवं विचारों का ही पड़ता है इसलिये आकार की दृष्टि से अचेतन मन का सबसे बड़ा भाग है। फ्रायड के बाद एडलर तथा युंग मनोविश्लेषकों ने भी अचेतन मन पर अपने विचार व्यक्त किये हैं । एडलर चेतन तथा अचेतन में कोई भेद नहीं मानते। वे व्यक्तित्व के विकास में दोनों को सहायक मानते हैं वहीं सी. जी. युगं चेतन और अचेतन की सत्ता तो स्वीकार करते हैं, किन्तु भिन्न रूप में युंग अचेतन का वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए, इसके दो भाग स्वीकर करते हैं- पहला 'व्यक्तिगत अचेतन' और दूसरा 'सामूहिक अचेतन'। व्यक्तिगत अचेतन फ्रायड के अचेतन के समान है, जिसमें व्यक्तिगत कुंठित एवं दमित इच्छाएं रहती हैं। सामूहिक अचेतन या जातीय अचेतन का संबंध व्यक्ति के संस्कारों तथा जातीय स्मृतियों के कल्पित भण्डार से है। मनोविश्लेषण को फ्रायड परिभाषित करते हुए कहते हैं कि "मनोविश्लेषण ऐसी मानसिक प्रक्रियाओं के अनुसंधान की एक प्रणाली का नाम है, जो अन्य विधियों की पहुंच से परे है, इसके अतिरिक्त वह मानसिक उपचार की एक विधि और इन दिशाओं से उपलब्ध मनोवैज्ञानिक वस्तुज्ञान के ऐसे संग्रह का नाम भी है, जो क्रमश: एक नयी मनोवैज्ञानिक पद्धति से संचित होता जा रहा है।"[7] फ्रायड मनोविश्लेषण को मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन का एक शास्त्र एवं मनोरोगों के उपचार की एक पद्धति माना है। प्रसिद्ध मनोवौज्ञानिक जैस्ट्रो मनोविश्लेषण को परिभाषित करते हुए कहते हैं-"मनोविश्लेषण मनोविज्ञान का वह अंश है, जिसका लक्ष्य मानसिक शक्ति के उद्गम और वितरण का अध्ययन करता है।"[8] वहीं प्रमुख साहित्यकार धीरेन्द्र वर्मा भी मनोविश्लेषण को एक चिकित्सा पद्धति मानते हैं। उनका मानना है कि "यह अपने प्रमुख एवं प्रारम्भिक रूप के मानसिक और स्नायविक रोगों की चिकित्सा की विशेष विधि है, जिसके आस- पास मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का संघटन होता है।"[9] उपर्युक्त कथनों के आधार पर कहा जा सकता है कि मनोविश्लेषण मूल रूप में मनोविज्ञान की ही एक प्रमुख शाखा

है। इसमें मानव मन, इच्छाओं, कामनाओं, स्नायुविकृतियों एवं असामान्य व्यवहार का विविध स्तरों पर विश्लेषण किया जाता है और मानसिक व्याधियों का उपचार किया जाता है। वर्तमान संदर्भ में मनोविश्लेषण को 'चिकित्सा मनोविज्ञान' भी कहा जाता है।

मनोविश्लेषण की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इसमें मनोरोगियों के संबंध में चिरकाल से चली आ रही असंगत धारणाओं, मान्यताओं एवं भ्रमों को तोड़ने का भी काम किया है। मनोविश्लेषण से पूर्व मनोरोगों को प्रेतात्मा के प्रभाव का परिणाम माना जाता था। इस प्रेतात्मा से छुटकारा दिलाने के लिए मनोरोगी को अनेक प्रकार के कष्ट व यातनाएँ दी जाती थी और उसके साथ अमानुषिक व्यवहार किया जाता था। मनोविश्लेषण ने इन मनोरोगों की पहचान की और इनका निदान खोजा। मनोविश्लेषण ने ऐसे मानसिक रोगियों के प्रति अपनी पूर्ण सहानुभूति का परिचय दिया और मनोविश्लेषण विधि से उनकी चिकित्सा करके, उन्हें सामान्य जीवन जीने के अवसर प्रदान किए। अत: मनोविश्लेषण की इस अपार सफलता के कारण ही आज यह संपूर्ण मनोविज्ञान का पर्याय बनता जा रहा है।

साहित्य और मनोविज्ञान का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। मनोविज्ञान सदैव किसी न किसी रूप में साहित्य के साथ गतिमान रहा है। साहित्य और मनोविज्ञान दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। साहित्य और मनोविज्ञान व्यक्ति की बौद्धिक सृष्टि है। साहित्य की प्रत्येक घटना या क्रिया- व्यापार बाह्य जगत् में न घटित होकर, साहित्यकार एवं पाठक के मानसिक जगत् में घटित होती है। अत: साहित्य सृजन और उसका आस्वादन दोनों ही मनोवैज्ञानिक अनुभूतियां हैं। डॉ.रामकुमार वर्मा साहित्य और मनोविज्ञान के इसी अंत:संबंध को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि "मानव मन मनोविज्ञान का विश्लेष्य है। यही मन भावों या मनोवेगों का आश्रय, मनोविकारों का स्रोत एवं अनुभूतियों का कोष है। साहित्य इन्हीं मनोविकरों और अनुभूतियों की (रोचक) कथा है।"[10] मन मानव की इच्छाओं या कामनाओं का उद्गम स्थल है। इसी मन का अध्ययन एवं विश्लेषण मनोविज्ञान करता है। मन में अच्छी और बुरी दोनों ही वृत्तियां मिलती हैं। संसार की जितनी भी अनिष्टकारी, अमंगलकारी, षड्यन्त्रकारी एवं विनाशकरी वृत्तियां मिलती हैं, वे सब मन की ही उपज है। यही मन सब समस्याओं का उद्गम स्थल है। इन्हीं समस्याओं एवं वृत्तियों का चित्रण साहित्य में किया जाता है। अत: साहित्य और मनोविज्ञान का प्रयोजन एक ही है- वह है, मानव जीवन को अधिकाधिक सरल, सहज व सुन्दर बनाना। मानव- जीवन को संचालित एवं जीवन्त शक्ति प्रदान करने वाला यही मानव- मन अपरिमित कामनाओं, इच्छाओं, आकाक्षाओं, भावनाओं, संवेदनाओं आदि विषय- वासनाओं का कोष होता है। इन्हीं विषय-वासनाओं की तृप्ति एवं शमन के लिये व्यक्ति आजीवन संघर्षरत है। उसका यह संघर्ष मानसिक स्तर से प्रारम्भ होता हुआ, सामाजिक स्तर तक पहुंच जाता है। इस संघर्ष में वह इतना थक, टूट एवं बिखर जाता है कि वह अनेक मनोव्याधियों से घिर जाता है। तदन्तर वह रुग्ण जीवन जीने के लिये अभिशप्त हो जाता है। उसकी इन्हीं मनोव्याधियों को जानने- समझने व उनके उनके उपचार के लिये मनोविश्लेषण की आवश्यकता पड़ती है। यह मनोविश्लेषण, मनोविज्ञान का ही एक संप्रदाय या उसकी एक चिकित्सा-पद्धति है। अत: जहां साहित्य मानव जीवन और उसके भावों और विचारों को चित्रित करता है वहां मनोविज्ञान उन भावों और विचारों का शास्त्रीय अध्ययन करता है। साहित्य में पात्रों का संघर्षों का वर्णन है तो मनोविज्ञान उन संघर्षों के मूल कारणों को व्यक्त कर देता है। इसी प्रकार पात्रों के आचरण संबंधी असंगतियों का स्पष्टीकरण भी हमें मनोविज्ञान से प्राप्त होता है।

साहित्य में मनोविज्ञान को दो रूपों में देख सकते हैं । पहला, वे रचनाएं जो मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को आधार बनाकर लिखी जाती हैं अथवा मनोवैज्ञानिक तत्त्व समाहित होते हैं। ऐसी रचनाओं के अध्ययन का विषय मनोविश्लेषणात्मक होता है। उदाहरण के लिये अज्ञेय की कविताएं इत्यादि। दूसरा, ऐसी रचानएं जिसमें मनोविज्ञान के तत्त्व अप्रत्यक्ष रूप में होते हैं। रचनाकार को रचना करने अथवा लिखने के लिए प्रेरित करने वाली प्रक्रिया का संबंध किसी न किसी रूप से मनोविज्ञान

से है। वे रचनाएं चाहे राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मार्क्सवादी, भाषिक अथवा अस्मितामूलक विमर्शों आदि से संबंधित क्यों न हों , अपितु उनका अप्रत्यक्ष रूप से संबंध मनोविज्ञान से होता ही है।

आधुनिक हिंदी साहित्य को मनोविश्लेषणवाद ने पर्याप्त रूप से प्रभावित किया है। साहित्य का संबंध मानव मन से प्रगाढ़ रूप में है।अत: साहित्यकारों द्वारा प्रस्तुत चरित्र-चित्रण पर आधुनिक मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव प्रमुख रूप से परिलक्षित होता है, क्योंकि आधुनिक काल में फ्रायड ने मनोविज्ञान को अचेतन मन की भूमिका पर कामवासना(लिबिडो) नामक ग्रंथियों के विश्लेषण द्वारा मनोविज्ञान का मार्ग प्रशस्त किया है। फ्रायड के अनुसार –"चाहे प्रभाव की मात्रा से या उत्तेजना के योग से अलग करके ही इसे समझा जा सकता है, जिसमें मात्रा के सभी लक्षण विद्यमान हैं। भले ही उसे नापने का कोई साधन हमारे पास न हो, लेकिन ऐसा कुछ है, जो सहज घट-बढ़ सकता है या स्थानांतरित निर्धारित हो सकता है तथा किसी भी विचार बिंब के स्मृति अवशेषों पर उसी प्रकार फैल सकता है, जिस प्रकार विद्युत शक्ति किसी पदार्थ की सतह पर फैलती है।"[11] फ्रायड के अतिरिक्त एडलर और युंग ने भी अपने मनोविज्ञान के सिद्धांतों का विवेचन करते हुए साहित्य को प्रभावित किया है। एडलर ने हीनता तथा मैकहम ने मनोविज्ञान जिजीविषा पर जोर देते हुए यह स्वीकार किया है कि प्रत्येक व्यक्ति जीने की प्रबल इच्छा रखता है। इसलिए उसमें एक ऐसी शक्ति विद्यमान रहती है, जो उसे कार्य करने के लिए प्रेरित करती है, लेकिन युंग का मानना है कि जब मनुष्य की स्मृतियां मानसिक कार्य व्यापार कि चेतन मन में एकत्रित नहीं रख पाती और वे अचेतन मन में चली जाती है। अचेतन मन में रहने से दमित रहने वाली अनुभूतियां एवं विचार अहं को स्वीकार्य नहीं हो पाते, परिणामत: यहां भय, आशंका, मृत्यु जैसी स्थितियां उत्पन्न हो जाती है, जिससे मनुष्य का जीवन प्रभावित होता है। पाश्चात्य विद्वानों में विश्लेषण की प्रवृत्ति पर्याप्त मात्रा में देखने को मिलती है। वर्जीनिया वूल्फ, जेम्स ज्वारस, डी.एच. लॉरेंस, कोनार्ड जैसे उपन्यासकारों ने फ्रायड, युंग, एडलर के सिद्धांतों को अपनाते हुए मनोविश्लेषण का समावेश किया है। भारतीय कथा साहित्य में सर्वप्रथम बांग्ला कथाकारों में मनोविश्लेषण दिखाई देता है। बंकिमचंद्र के 'विष वृक्ष', रविंद्रनाथ टैगोर के 'चोखेरबाली' में कलात्मक मार्मिकता के साथ मनोविश्लेषण का आश्रय ग्रहण किया है। हिंदी साहित्य में मनोवैज्ञानिक कथा साहित्य का उद्देश्य उन कथा साहित्य से है, जिनमें मनोविश्लेषण और आधुनिक मनोविज्ञान का प्रभाव दिखाई पड़ता है। मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है और साहित्यकार मानव व्यवहार का विश्लेषण करता है। हिन्दी के कथाकार यथा इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र एवं अज्ञेय में ऐसे पात्रों का सृजन किया है जो फ्रायड, युंग एवं अल्फ्रेड एडलर के सिद्धान्तों से परिचालित होते हैं। जैनेन्द्र के उपन्यास परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, सुखदा, व्यतीत तथा जयवर्धन आदि प्रमुख हैं। इन उपन्यासों में नारी की पीड़ा तथा मानव की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति तथा भारतीय दर्शन के विभिन्न रूपों का चित्रण किया गया है। इलाचंद जोशी का जहाज का पंछी तथा संन्यासी इत्यादि उपन्यासों ने भी अभूतपूर्व लोकप्रियता अर्जित की है। अज्ञेय द्वारा लिखित प्रसिद्ध उपन्यास 'शेखर: एक जीवनी' में नायक के अन्तराल की पीड़ा का सुन्दर चित्रण पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। इन सभी उपन्यासों में नारी पुरुष पात्रों के अतरंग संबंधों, नारी की पीड़ा, सामाजिक मर्यादाओं को तोड़ने का भय, निराशा, कुण्ठा, आन्तरिक द्वन्द का सुन्दर अंकन किया गया है। महत्वाकांक्षा की पूर्ति न होने पर हीनभावना, निराशा जनित पीड़ा तथा फलस्वरूप आक्रामक व्यवहार का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण किया गया है। इन उपन्यासों के पात्र कभी स्वयं पीड़ित होते हैं कभी दूसरों को पीड़ित करते हैं। ये सभी पात्र स्वयं का स्वयं से साक्षात्कार करते हुए दिखते हैं।

अन्तत: कहा जा सकता है कि साहित्य एवं मनोविज्ञान का संबंध बहुत गहरा है। ये एक दूसरे के साध्य एवं साधन बन गये हैं। साहित्य का अस्तित्व मनोविज्ञान के बिना संभव नहीं हो सकता, किन्तु मनोविज्ञान का अस्तित्व साहित्य के बिना भी हो सकता है। हिन्दी साहित्य में मनोविज्ञान दो रूपों में हमारे सामने उभरकर आता है। पहला, वे रचनाएं जिसमें प्रत्यक्ष रूप से

मनोवैज्ञानिकता के तत्त्व दिखायी देते हैं। दूसरा स्वरूप उन रचनाओं का है, जिसमें मनोवैज्ञानिक तत्त्व अप्रत्यक्ष रूप से समाहित है।

-: सन्दर्भ सूची :-

1. शिक्षा मनोविज्ञान, के. पी. पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृष्ठ. संख्या 6, वर्ष 2009
2. शिक्षा मनोविज्ञान, के. पी. पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृष्ठ. संख्या 28, वर्ष 2009
3. शिक्षा मनोविज्ञान, के. पी. पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृष्ठ. संख्या 6, वर्ष 2009
4. उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, अरुण कुमार सिंह(मोतीलाल बनारसीदास), नयी दिल्ली, पृष्ठ. संख्या 17, वर्ष 2002
5. शिक्षा मनोविज्ञान, एस. के. मंगल, पी. एच. आर्ट. लर्निंग प्रा. लि. नयी दिल्ली, पृष्ठ.संख्या 6, वर्ष 1990
6. शिक्षा मनोविज्ञान, एस. के. मंगल, पी. एच. आर्ट. लर्निंग प्रा. लि. नयी दिल्ली, पृष्ठ. संख्या 6, वर्ष 1990
7. कलेक्टेड पेपर्स, फ्रायड, पांचवां भाग, पृ.सं.107, उद्धृत - आधुनिक मनोविज्ञान और हिन्दी साहित्य, पृ.सं. 64
8. Freud: His Dream and Sex thoereis , Jastrow J., P. No. 50, Year 1950, उद्धृत- हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, डॉ. मफतलाल पटेल, पृ.सं. 27
9. हिन्दी साहित्य कोश (भाग -1), सं. धीरेन्द्र वर्मा , पृ.सं. 475
10. साहित्य शास्त्र, डॉ. रामकुमार वर्मा, पृ.सं. 10
11. अज्ञेय एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन, डॉ. ज्वालाप्रसाद खेतान, पृ.सं. 91